संजीव के कथा साहित्य में आदिवासी चेतना

डॉ. माधव राजप्पा मुंडकर,
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
नाईट कॉलेज ऑफ आर्टस् ॲण्ड कॉमर्स,
इचलकरंजी।
मो.न. 8888198884
Email- madhav.mundkar@gmail.com

शोध सार:

आदिवासी समुदाय का इतिहास देखने पर पता चलता है कि आदिवासियों में प्रतिरोधक की भावना हमेशा से मौजूद रहती हैं। वैसे देखा जाए तो आदिवासी एवं अन्य जातियों के बिच संघर्ष की बड़ी परम्परा देखने को मिल जाती है। वास्तव में आदिवासियों का संघर्ष जल, जमीन एवं जंगल के लिए दिखाई देता है। अपनी अस्मिता एवं अस्थित्व को बनाए रखने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। आदिवासी बड़े ही सरल सीधे-सादे होते हैं। आदिवासियों के बारे में रूपचन्द वर्मा लिखते हैं "आदिवासी लोग बहुत ही सीधे-सादे और स्वाभिमानी है यह शोषणकारी दुश्मनों के खिलाफ अनवरत लडे और इन्होने अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाए रखा है।"[2] आदिवासियों का अधिकांश जीवन जंगल एवं कृषि पर निर्भर करता है। आजादी के बाद हमने समाजवादी समाज व्यवस्था स्वीकार किया। आजादी के पहले आदिवासी अधिकतर जल, जंगल एवं जमीन से ही जुड़े हुए थे परंतु 60 के दशक में वे उद्योग एवं मजदूरी करने के लिए मजबूर देखने को मिल जाते हैं। नगरों में जाकर कारखानों में मजदूरी करना, वनविभाग में मजदूरी करने लगे। इन सभी जगहों पर आदिवासियों की आय तो नहीं बढी लेकिन शोषण को जरूर बढावा मिला कारखानों में मजदूरों को कम मजदूरी दी जाती है या देते ही नहीं है। मजदूरों की जान की परवाह भी नहीं की जाती।

बीज शब्द: आदिवासी, संजीव, साहित्य

हिंदी साहित्य में अनेक साहित्यक धाराएँ देखने को मिल जाती है। हिंदी साहित्य अनेक धाराओं एवं दिशाओं से होता हुआ गुजर रहा है, जैसे की स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, अल्पसंख्यांक विमर्श आज तो किन्नरों को लेकर चर्चाएँ हो रही है। सूदूर इलाकों में रहनेवाले तथा जल, जंगल और भूमि को अपना सबकुछ माननेवाले आदिवासियों का साहित्य भी देखने को मिल जाता है। हिन्दी आदिवासी साहित्यकारों में संजीव का विशेष उल्लेखनीय है, उन्होंने अपनी कहानियों एवं उपन्यासों के लिए पश्चिम बंगाल एवं बिहार के परिवेश को चूना है। वहाँ की जनजातियों का चित्रण अपने कथा साहित्य के माध्यम से किया है। 'किशनगढ़ के अहेरी', 'सावधान नीचे आग है', 'सूत्रधार', 'जंगल जहाँ शुरू होता है', 'पाँव तले की इप', 'रह गयी दिशाएँ इसी पार', 'प्रेतमुक्ति', 'अपराध', 'शिनाख्त', 'दुनियाँ की सबसे हसीन औरत' आदि साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से सामाजिक चेतना का चित्रण किया है।

संजीव के कथा साहित्य में सिर्फ दयनीय और पीड़ित स्थितियों का ही चित्रण नहीं है बल्की पीड़ित, शोषित, उपेक्षित लोगों का विरोधी स्वर भी देखने को मिल जाता है। संजीव अपने कथा साहित्य के संबंध में कहते हैं कि ''देश के लाखों दलित, दमित, प्रताड़ित, अवहेलित जनों की जिजिविषा और संघर्ष का मैं ऋणी हूँ, जिन्होंने वर्ग, वर्ण, भाषा, सम्प्रदाय के तंग दायरों को तोड़ते हुए शोषकों, दलालों, कायरों के विरूद्ध मानवीय अस्मिता की लढाई लड़ी है और लड़ रहे हैं। मेरा लेखन उससे कण मुक्ति की छटपटाहट भर है।''[1]

आदिवासी समुदाय का इतिहास देखने पर पता चलता है कि आदिवासियों में प्रतिरोधक की भावना हमेशा से मौजूद रहती हैं। वैसे देखा जाए तो आदिवासी एवं अन्य जातियों के बिच संघर्ष की बड़ी परम्परा देखने को मिल जाती है। वास्तव में आदिवासियों का संघर्ष जल, जमीन एवं जंगल के लिए दिखाई देता है। अपनी अस्मिता एवं अस्थित्व को बनाए रखने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। आदिवासी बड़े ही सरल सीधे-सादे होते हैं। आदिवासियों के बारे में रूपचन्द वर्मा लिखते हैं "आदिवासी लोग बहुत ही सीधे-सादे और स्वाभिमानी है यह शोषणकारी दुश्मनों के खिलाफ अनवरत लडे और इन्होने अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाए रखा है।"[2] आदिवासियों का अधिकांश जीवन जंगल एवं कृषि पर निर्भर करता है। आजादी के बाद हमने समाजवादी समाज व्यवस्था स्वीकार किया। आजादी के पहले आदिवासी अधिकतर जल, जंगल एवं जमीन से ही जुड़े हुए थे परंतु 60 के दशक में वे उद्योग एवं मजदूरी करने के लिए मजबूर देखने को मिल जाते हैं। नगरों में जाकर कारखानों में मजदूरी करना, वनविभाग में मजदूरी करने लगे। इन सभी जगहों पर आदिवासियों की आय तो नहीं बढी लेकिन शोषण को जरूर बढावा मिला कारखानों में मजदूरों को कम मजदूरी दी जाती है या देते ही नहीं है। मजदूरों की जान की परवाह भी नहीं की जाती।

'सावधान! नीचे आग है' उपन्यास में आदिवासियों के यथार्थ का चित्रण अंकन किया गया है। कोयले की खदानों में मजदूरी करनेवाले आदिवासियों के नाम कईबार दर्ज नहीं होते। कोई घटना घटित हो जाती है तो मुआवजा तक मिल नहीं पाता। मैनेजमेंट की लापरवाही के कारण कोयले की खदान में कई आदिवासी मजदूर डूब जाते हैं। सरकार का दायत्व बनता है। कि पीड़ित लोगों की मदद की जानी चाहिए। लेखक कहता है "अफसरों की बीवियाँ संतरा, सेव, कपड़ा लेकर अपने चटख कपड़ों में दरवाजे -दरवाजे बाँट रही थी, आगे-आगे इस्पात मंत्री और उपायुक्त। एक अकेले घरके दरवाजे पर एक औरत अपने बच्चों के साथ रोती मिली। मंत्री रूक गए उपायुक्त ने लिस्ट देखी क्या नाम तुम्हारे पति का? "फांसिस हेम्बम।"[3] इस नाम का कोई व्यक्ति लिस्ट में दर्ज न होने कारण उस महिला को कोई सहायता प्राप्त नहीं होती है। उल्टा उसे कहा जाता है कि कहीं पीकर पड़ा होगा। अमानवीय व्यवहार तथा आदिवासियों के प्रति अविश्वास का भाव देखने को मिल जाता है।

शासकीय यंत्रणाओं के द्वारा आदिवासियों का शोषण किया जाता है, इसका उदाहरण हमें संजीव के 'धार' नाम उपन्यास के माध्यम से देखने को मिल जाता है। आदिवायों का जंगल, जमीन, कोयला खदानों पर नाम मात्र अधिकार देखने को मिल जाता है। पूँजीपतियों वर्ग के द्वारा भोली-भाली जनता को फसाकर सब कुछ छीन लेते हैं, वदले में मिलता है मात्र तिरस्कार 'धार' उपन्यास में महेंद्र बाबू, मैना के पिता को बहला-फुसलाकर अनेक प्रकार के लालच देकर जमीन को हड़प लेते हैं, मैना का पति जनखदान से कोयला निकालता है तो पुलिस उस पर रोक लगाती है मैना सबके खिलाफ संघर्ष करती है और साहस के साथ अपने अधिकारों के लिए खड़ी होती है। ''देखिए आप लोग आपास में फैसला कर लीजिए अभी-अभी पुलिस को दिया, अब आप लोग आए हैं। कितना देगा। उसने ऐसा कहा माने घर की मालिकन भिखारियों को झिडक रही हो। थोडी बहुत खिच-खिच के बाद पचास पर अड़ गयी। "इससे जास्ती नही सिपाई साव, चाहे खाल रिस लो"[4] मैना नामक आदिवासी महिला के माध्यमसे कथाकार संजीव ने प्रशासन व्यवस्था का विरोध किया है। जिन लोगों के माध्यम से सरंक्षण मिलना चाहिए वेही भ्रष्ट हो चूके हैं। मैना के माध्यम से आदिवासी नारियों निर्माण हो रही नवचेतना को लेखक ने उजागर किया है।

महाजनों एवं सूदखोरी व्यवस्था का विरोद्ध कथाकार संजीव ने अपने कथा साहित्य के माध्यमसे किया है। महाजन लोगो में भी आदिवासियों का भरपूर शोषण किया है, आदिवासी समाज आजादी के बाद भी इनके चुंगुल से बाहर नहीं आ पाया है। आदिवासियों को सूद पर पैसा देकर उनकी जमीन को हड़प लिया है। खाने-कमाने के लिए आज उनके पास अपनी जमीन ही नहीं बची है। 'पाँव तले की दूव' उपन्यास में संजीव आदिवासियों को अपनी जमीन वापस लेने के लिए संघर्ष करवाते हैं। "दूसरी सुबह हम जल्दी-जल्दी तैयार होकर टीले पर पहूँचे थे। मेड पर नगाड़ा बज रहा था और तीर धनुष, कुल्हाडी, हाँसिया लिए काले-काले दरिद्र आदिवासी, महिला, पुरुष, बच्चे तक दो-एक बन्दुक भी थी। बहुत दूर पर खडे कुछ अपेक्षाकृत सम्पन्न से दिखनेवाले लोग ताक रहे थे मगर वे पास न फटके और दोपहर तक सारा धान कट बटकर पहाड़ की दरारो में समा गया।"[5] अब आदिवासी समूदाय अपने अधिकारों के प्रति सचेत हुआ है, इन्हें और अधिक दबाया नहीं जा सकता डराया धमकाया नहीं जा सकता, आदिवासियों में नवचेतना निर्माण हुई है, ऐसा कथाकार संजीव कहते हैं।

'प्रेतमुक्ति' कहानी में एक तरफ आदिवासीयों की मेहनतकश और अभावग्रस्त जिन्दगी के दुःख दर्द को चित्रित करते हैं दूसरी और मुखिया जी और सुरेन्द्रर जी जैसे सामंतों की सामंती व्यवस्था के प्रेत से प्रेतमुक्ति दिलाते हैं। मुखिया जी इलाके की एक मगा नदी पर सामंती व्यवस्था के प्रेत से प्रेत मुक्ति दिलाते हैं। मुखिया जी इलाके की एक माग नदी पर बाँध बनाकर सारे पानी को रोक लेते हैं जिससे जानवर तो जानवर उस क्षेत्र के आदिवासी लोग तक बिना पानी के प्यासे रह जाते हैं। इसके विरोध स्वरूप काका (महतो) सोर इलाके में घूमकर इस बाँध के बारे में आदिवासियों को अवगत कराता है, बाँध के कारण आदिवासियों को पानी के लिए तडपना पडेगा। काका बाँध के बाजू में पाड़ा बाँधकर रोज बाँध को तोड़ देता है, परंतु एक दिन मुखिया पाड़ा की जगह काका को बाँध देता है जिसके कारण शेर काका की शिकार कर देता है। काका का प्रेत देखकर उनके बेटे जगेसर पर असर हो जाता है, जगेसर में पागलपन निर्माण हो जाता है। एक दिन को आकोत करनेवाले मुखिया के बेटे सुरेन्दर जी को मरकर प्रेतमुक्ति पाता है -''तीसरे पहर दूरसे ही जंगल हरहराया। आँधी से सुरेन्दार जी के चीखने की आवाज एक बार आई और फिर चिथडी - चिथड़ी हो गई। बाँध कटा हुआ था। हरहराता कलकलाता पानी तेजी से वह रहा था।"[6] वास्तव में आन्तरिक बेचैनी, व्याकुलता और विवशता व्यक्ति को ऐसी लड़ाई और संघर्ष की ओर प्रवृत्त कर देती है। संजीव ने दिखाया है कि आदिवासी समाज की नई पीढ़ी अपने संघर्ष और विद्रोह की नई चेतना को लेकर आगे बढ रही है।

संजीव के विचारों पर क्रांतिकारी भगतसिंह एवं नक्सलवादी आंदोलन का गहरा प्रभाव देखने को मिल जाता है। समाज, देश और मनुष्यता के प्रति समर्पित हर शख्स उनकी सहानुभूति का पात्र है। सामंतवाद, पूँजीवाद और साम्राज्यवाद के खिलाफ जनता की व्यापक एकता उनका सपना है। अपने कथा साहित्य में जहाँ एक ओर उन्होंने जनता के दुःख-दर्द एवं पीड़ा को अभिव्यक्त किया है तो दूसरी ओर इन शक्तियों के विरूद्ध आवाज भी उठाई है।

मानवी स्तर पर नक्सलवाद का वे समर्थन करते हैं परंतु बिगडे हुए रूप को नकारते हैं। 'अपराध' कहानी इसी भाव को लेकर आगे चलती है। गुनाह होते हुए भी व्यक्तियों को पुलिस के द्वारा मार-मारकर बदहाली या मरवा डालते हैं तो अनायास रूप से आदिवासी नक्सलियों की ओर झुकने लगते हैं। उनके लिए तो वही भगवान बन जाते हैं। 'अपराध' कहानी का नायक सचिन को सजा से बचाने के लिए अपना पक्ष रखने की बात की जाती है तो वह कहता है ''मुझे इस पूँजीवादी, प्रतिक्रियावादी न्याय व्यवस्था में विश्वास नहीं है। आम जनता भी जिसे न्याय का मंदिर कहती है वह लूटेरे पंगे और जूता चोरों से भरा पड़ा है।''[7] नक्सलवादी आंदोलन यह शोषण, पूँजीवाद, सामंतवाद, जमीदारी, सूदखोर आदि को मिटाने के लिए आदिवासियों के द्वारा चलाया गया है। कहानी के माध्यम से बतलाया गया है कि सत्ता, समाज एवं व्यवस्था के विरूद्ध संघर्ष के द्वारा हो समाप्त किया जा सकता है। इसी प्रकार से 'ऑपरेशन जोनाकि' कहानी के माध्यम से संजीव ने भ्रष्टकर्मी, महाजनों, अफसरों एवं जमीनदारों के द्वारा किए जानेवाले शोषण का चित्रण किया है। शिक्षित के माध्यम से आदिवासियों में जागृती निर्माण करके इस व्यवस्था के विरोध में सभी आदिवासी समाज को एकत्रित करता है।

प्रारंभ से ही आदिवासी समुदाय का अलग-अलग लोगों के साथ संघर्षमय इतिहास देखने को मिल जाता है। आज के बदलते परिवेश के साथ बाजारीकरण, भूमंडलीकरण एवं नवउदारीकरण के बदौलत आदिवासियों का जीवन तो और भी दूभर हो गया है। विकास के नाम पर इनकी जमीन छिन ली जाती है, जंगलों पर अधिकार बना लिया जाता है, नई व्यवस्था के कारण पुलिस, न्याय व्यवस्था, प्रशासन आदि के माध्यम से आदिवासियों का शोषण किया जाता है। आज इन लोगों को टाटा, विरला, अंबानी, आदानी जैसे लागों के साथ संघर्ष करना पड़ रहा है। इसी संघर्ष को कहानीकार संजीव ने 'दुनिया की सबसे हसीन औरत' कहानी के माध्यम से दर्शाया है। संजीव मानते हैं कि संघर्ष करनेवाली आदिवासी स्त्री ही दुनियाँ की सबसे हसीन औरत है।

कहानी में आई हुई ओराव जाति कि महिलाओं ने मुगल सलतनत को तीन बार हराया था । यह लड़ाई महिलाओं ने की थी। चौथी बार हार जाने के बाद मुगल सैनिकों ने अपने हार के बदले में इनके गालों पर तीन निशान बनाएँ। आज भी आदिवासी औरतें अपने गाल पर तीन निशाण गुदवाती है। वह इसे अपना गौरव समझती है ''उन दागो को कलंक न मानकर सभी ओराव औरतों द्वारा सिंगार के रूप में अपना लिया।''[8] अंतः कहा जा सकता है कि संजीव के कथा साहित्य में आदिवासी समाज का संघर्षशील इतिहास देखने को मिल जाता है | जल, जंगल एवं जमीन तक अपने आपको सीमित रखनेवाले आदिवासी समुदाय नागरी सभ्यता के संपर्क में आने के कारण संघर्ष, शोषण, प्रशासन, पुलिस, महाजन, सूदखोर, पूँजीपति, जमींदार, राजसत्ता के कारण संघर्षशील रहा है। आज भी आदिवासी समाज समाज की मुख्य प्रवाह से दूर है। सरकार की ओर से योजनाओं की घोषणा की जाती है, परंतु भ्रष्ट प्रशासन के कारण उनतक पहुँच नहीं पाती। अपने कथा साहित्य के माध्यम से संजीव ने आदिवासी समाज में चेतना निर्माण करने का कार्य किया है।

संदर्भ सूची :

1. संजीव, 'संजीव की कथा यात्रा पहला पडाव', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली प्र. सं. 20
2. रूपचन्द्र वर्मा, 'भारतीय जनजातियाँ', प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार नई दिल्ली प्र. सं. 71
3. संजीव, 'सावधान ! नीचे आग है', राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली प्र. सं. 202-203
4. संजीव, 'धार', राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली प्र.सं. 99
5. संजीव, 'पाँव तले की दूब', वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर प्र. सं. 16
6. संजीव, 'संजीव की कथा यात्रा पहला पडाव', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली प्र. सं. 345
7. वही प्र. सं. 308
8. वही प्र. सं. 309